महिला सशक्तिकरण

एक चुनौती

संपादक

प्रा. डॉ. भीमराव रामकिशन घोडगे

प्रा. डॉ. सुखदेव रामा पाटील

ISBN : 978-93-86579-37-9

प्रथम संस्करण : 2018

© संपादक

पुस्तक का नाम : महिला सशक्तिकरण : एक चुनौती

सम्पादक : प्रा. डॉ. भीमराम रामकिशन घोडगे

प्रा. डॉ. सुखदेव रामा पाटील

सह संपादक : प्रा. एस. डी. कोरेवोईनवाड

प्रा. सुधाकर वाघमारे

प्रकाशक : आर. के. पब्लिकेशन

1/12, पारस दूबे सोसायटी, ओवरी पाडा, एस.वी. रोड,

दहिसर (पूर्व), मुम्बई - 400 068.

फोन : 9022 521190 / 9821 251190

E-mail : publicationrk@gmail.com

आवरण सज्जा : रेकन क्रिएशन्स, मुंबई

मुद्रक : सुमन ग्राफिक्स, मुंबई

मूल्य : ₹ 399/-

Mahila Sashaktikaran : Ek Chunauti

Edited by Pro. Dr. Bhimrao Ramkishan Ghodge & Dr. Sukhdev Rama Patil

अनुक्रम

1. स्त्रीवाद और स्त्री सशक्तिकरण 14
   - *प्रा. डॉ. बदने रामकृष्ण दत्तात्रेय*
2. महिला सशक्तिकरण : दशा और दिशा 19
   - *डॉ. शरद शेषराव कदम*
3. आधुनिकता के परिप्रेक्ष्य में महिला सशक्तिकरण 26
   - *प्रा. विरेश उत्तमराव देशमुख*
4. भारत की बदलती तस्वीर में महिलाओं का योगदान 33
   - *प्रा. छाया शेषेराव तोटवाड*
5. महिलाओं में उभरता साहित्यिक वर्ग : कल और आज 38
   - *प्रा. डॉ. भीमराव रामकिशन घोडगे*
6. नारी शौर्य एवं वीरता का प्रतीक : वीरांगना झलकारी बाई 43
   - *जांभळे राजेश सखाराम*
7. संजीव कृत 'धार' उपन्यास की मैना : नारी चेतना की ओर बढ़ता कदम - *प्रा. ढेपे प्रशांत नारायण* 48
8. सुशीला टाकभौरे कृत नीला आकाश में नारी सशक्तिकरण का दर्शन - *प्रा. एस.डी. कोरेबोईनवाड* 54
9. प्रसार माध्यमों में मृणाल पांडे जी का योगदान 60
   -*प्रा. संजीव मुकुंदराव कदम*
10. मन्नू भंडारी के उपन्यासों में नेतृत्व एवं संघर्ष क्षमता रखनेवाली नारी - *प्रा. सुखदेव रामा पाटील* 64
11. हिंदी कहानी साहित्य में महिला सशक्तिकरण 69
    - *डॉ. पुष्पलता अग्रवाल*

12. स्त्री विमर्श क्या है ? और क्यों है ? 78
- प्रा. मोरे वर्षा नागोराव
13. मृणाल पाण्डे कृत 'देवी' उपन्यास में स्त्री चेतना का आंदोलनात्मक रूप - प्रा. डॉ. संजीवकुमार नरवाडे 84
14. डॉ. शशिप्रभा शास्त्री के कथात्मक साहित्य में स्त्री-विमर्श 89
- प्रा. गायकवाड विजयमाला विश्वनाथराव
15. दोहरा अभिशाप में व्यक्त स्त्रीवादी चेतना का स्वर 96
-प्रा. चालिकवार स्मिता कल्याणराव
16. 'शिकंजे का दर्द' आत्मकथा में व्यक्त स्त्री चेतना 105
- कदम अश्विनी भारत
17. मैत्रेयी पुष्पा : एक संघर्षमय जीवंत नारी 110
- प्रा. इमरान खान
18. महिला सशक्तिकरण की प्रतीक 'कौशल्या वैसंत्री' 114
- प्रा. पाटील राहुल नारायण
19. मैत्रेयी पुष्पा के कथा साहित्य में चित्रित नारी विमर्श 119
- प्रा. वाघमारे सुधाकर
20. मोहनदास नैमिशराय कृत 'आज बाजार बंद है' उपन्यास में दलित नारी - श्री. सावते राजू अशोक 124
21. प्रभा खेतान के उपन्यासों में नारी का बदलता स्वरूप 128
- महिमा वर्मा
22. विज्ञान साहित्यातील स्त्री - प्रा. कल्पना जाधव 133
23. स्त्री जीवन संघर्षाची गाथा-भूमी 138
- प्रा. कदम ज्ञानेश्वर अशोकराव
24. लिंगभाव परिप्रेक्ष्यातून स्त्री-चिंतन मांडणारी कविता 146
- प्रा. छाया हरिभाऊ कदम (पवार)
26. भारतीय संविधान आणि महिला ऐतिहासीक दृष्ट्रीक्षेप 152
-डॉ. परिक्षित भगवानराव धोंडगे

26. नामांतर चळवळीतील महिलांचा सहभाग 155
- श्री प्रमोद अर्जुनराव वाघमारे
27. मानवी हक्काचे मानवी जीवनातील महत्व 160
-प्रा. कांबळे तेजस देवबाराव एवं
प्रा. शिंदे माधव शंकरराव
28. महिला सक्षमीकरण- एक सामाजिक दृष्टिक्षेप 164
-प्रा. शेळके सुदर्शन किशनराव
29. स्त्री दुय्यमता आणि आरोग्य 173
- श्वेतांबरी कनकदंडे

■■■

स्त्रीवाद और स्त्री सशक्तिकरण

वर्तमान बौद्धिक साहित्य में और वैचारिक मंथनों में 'स्त्रीवाद' एक विचार के रूप में उभरकर आनेवाला 'स्त्री-विमर्श' है। स्त्रीवाद में नारी जीवन का इतिहास, स्थान, दर्जा और अस्तित्व के परिप्रेक्ष्य में किया हुआ मुक्ति आंदोलन है। सदियों से नारी को स्त्री-पुरुष लिंगभेद के आधार पर उसे उपेक्षित रखकर उसका शोषण किया जा रहा है। नारी केवल धार्मिक ग्रंथों में ही पूज्यनीय थी, लेकिन वास्तव में वह पुरुषों की दासी बनकर ही रह गयी। जैसे-जैसे काल बदलता गया, वैसे-वैसे नारियों के चुनौतियां भी बदलने लगी। और वह चुनौतियां बदलने का एक मात्र साधन है 'शिक्षा'। शिक्षा के कारण ही महिलाओं को अपनी गुलामी का एहसास हुआ और वह वैचारिक विमर्श करने लगी। संविधानिक अधिकारों और सामाजिक परिवर्तन के आंदोलनों ने उन्हें अपने अन्याय के खिलाफ संघर्ष करने की शक्ति दी। उनका आंदोलन किसी जाति, वर्ग, धर्म, वर्ण से ना होकर पुरुष प्रधान विषमतावादी विचारों के खिलाफ है। इसीलिए सन 1960 के बाद भारतीय परिवेश में 'स्त्रीवादी' विचार धारा का उद्‌भव हुआ। स्त्रीवाद का स्वरूप क्या है? और वह किस प्रकार महिला सशक्तिकरण के लिए सहायक है? इन प्रश्नों के उत्तर प्रस्तुत लेख का उद्देश्य है।

'स्त्रीवाद' स्वरूप की दृष्टि से देखा जाय तो स्त्री के विषय पर सटीक अनुसंधान प्रसिद्ध फ्रेंच लेखिका सिमोन द बोआ ने 'द सेकंड सेक्स' नामक पुस्तक में किया है। सिमोन के अनुसार समाज का परिवेश स्त्री को स्त्री बनाए रखने के जिम्मेदार होता है। इस संदर्भ में वे कहती है -'औरत को औरत होना सिखाया जाता है। और औरत बनी रहने के लिए अनुकूल बनाया जाता है" नारी का पुरुष प्रधान समाज व्यवस्था में जो रूप प्रस्तुत किय जा रहा है? क्या वही सही है? क्यों नारी का सामाजिक स्थान, दर्जा और अस्तित्व पुरुष की तुलना में निम्न है? क्यों नारियों को अबला मानकर उसकी उपेक्षा की जाती है? इन प्रश्नों को तलाशना ही 'स्त्रीवाद' है। समाज में नारी को कनिष्ठ स्थान देकर उसके मानवी रूप को नकार कर, उसे मानवीय अधिकारों से दूर रखा गया है। इसी स्थान में परिवर्तन

स्त्रियों के प्रवेश के लिए आंदोलन किया है, जो सदियों से इस मंदिर में महिलाओं के प्रवेश पर निषेध था। इन महिलाओं का आंदोलन धर्म सत्ता पाना नहीं था, तो पुरुषों के समान इंसान के रूप में अधिकारों की माँग थी। हाईकोर्ट के आदेश के अनुसार महिलाओं को मंदिर प्रवेश मिला। यानी इक्कीसवीं सदी तक आते-आते 'स्त्रीवाद' और 'स्त्री आंदोलन' सकारात्मक विचारों को लेकर चलने वाला आंदोलन बना है, जो स्त्री वर्ग का प्रतिनिधित्व करता है।

अतः स्त्रीवाद एक वैचारिक जमीन के साथ मजबूती से तैयार होने वाला, सामाजिक समानता के लिए सदैव लड़ने वाला आंदोलन है। वह स्त्री-पुरुष समानता चाहता है। उनका वैचारिक मतभेद पुरुष संस्कृति से है, पुरुष से नहीं। इसलिए पुरुषों से मतभेद हो सकते हैं, लेकिन मत भेद नहीं। 'स्त्रीवाद' महिलाओं को समाज में पुरुषों के साथ समरसता के आधार पर जीवन जीने का संदेश देता है। पुरुषों से अलग स्त्री का जीवन नहीं और स्त्रियों से अलग पुरुष जीवन सम्पूर्ण नहीं हैं। इसलिए -

"नारी के बिना सारा संसार अधूरा।
बिना नारी के पुरुष जीवन है अधूरा।"

प्रा. डॉ. बदने रामकृष्ण दत्तात्रेय
ग्रामीण महाविद्यालय वसंत नगर, मुखेड,
जि. नांदेड (महाराष्ट्र)

संदर्भ सूची :

1. *स्त्री उपेक्षिता -प्रभा खेतान पृष्ठ 79*
2. *समन्वय- 2001 - संपा. डॉ. अशोक जोंधळे पृष्ठ 81*
3. *वही*
4. *वही*
5. *हिंदी कथा और नारी - डॉ. सौ. जे.एस. देसाई - पृष्ठ 12*
6. *भारतीय समाज में नारी दशा एवं दिशा - डॉ. अलोक कुमार कश्यप पृष्ठ 24*
7. *मृदुला गर्ग के कथा में नारी - प्रो. डॉ. रमा नवले पृष्ठ 27*

प्रा. डॉ. भीमराव रामकिशन घोडगे

10/12/1984, हिंगोली (महाराष्ट्र)

आत्मज : श्री रामकिशन सिदोजी घोडगे

शैक्षिक योग्यता : एम.ए.(हिंदी), एम. फिल., पीएच. डी, नेट

प्रकाशन :
- विश्वनिर्माता : विश्वकर्मा (अनुवाद - हिंदी से मराठी)
- स्वच्छता से समृद्धि की ओर (अनुदित ग्रंथ) प्रकाशनार्थ
- विभिन्न पत्र-पत्रिकाओं में अनेक आलेख प्रकाशित

सम्प्रति : प्राध्यापक, नूतन महाविद्यालय, सेलू, जिला. परभणी (महाराष्ट्र)

संपर्क : डोंगरगाव (पूल) कळमनूरी तहसील, जिला हिंगोली-431701 (महाराष्ट्र)

दूरभाष : 9766013675,9765972503

प्रा. डॉ. सुखदेव रामा पाटील

06/05/1983, नांदेड (महाराष्ट्र)

आत्मज : श्री रामा दगडू जी पाटील

शैक्षिक योग्यता : एम.ए., एम. फिल., पीएच. डी., नेट, एम. एड. (शिक्षण शास्त्र)

प्रकाशन :
- डॉ. सुशीला टाकभौरे एवं हिंदी दलित आत्मकथा
- विश्वनिर्माता : विश्वकर्मा (अनुवाद - हिंदी से मराठी)
- विभिन्न राष्ट्रीय-अंतरराष्ट्रीय संगोष्ठियों में सहभागिता
- विभिन्न पत्र-पत्रिकाओं में अनेक आलेख प्रकाशित

सम्प्रति : प्राध्यापक, पीपल्स कॉलेज, नांदेड (महाराष्ट्र)

संपर्क : अर्पित निवास, मु. पो. दिग्रस तहसील-हदगाव, जिला-नांदेड-431712, (महा.)

दूरभाष : 9730533080, 9420457180

आर. के. पब्लिकेशन

मुम्बई

ISBN 978-93-86579-53-9

9 789386 579539

Rs. 399/-